Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
Volume-15, Issue-4, March-2022
www.researchguru.net

राजेन्द्र अवस्थी का उपन्यास सूरज किरण की छांव के प्रमुख पात्र

निलेश के पटेल

एच.डी., शोधार्थी, गूजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद, मो. नं. 6352843578,

ई-मेल:patelnilesh8673@gmail.com

सारांश :-

राजेन्द्र अवस्थी का उपन्यास सूरज किरण की छांव उपन्यास के पात्र कलात्मक एवं वर्तमान समाज के रूप में चित्रित पात्र है। वे अपने उपन्यास साहित्य के माध्यम से समाज में प्रभाव, देश, समाज तथा लोगों को सीख देने का प्रयास करते हैं और समाज को सकारात्मक नजरिए से देखने का प्रयास किया है।

शब्द कुंजी :- *राजेन्द्र अवस्थी का उपन्यास सूरज किरण की छांव के पात्रों का चरित्र चित्रण।*

प्रस्तावना :-

राजेन्द्र अवस्थी के उपन्यासों में प्रमुख पात्रों का चरित्र चित्रण विशेष रूप से किया गया है। उनके उपन्यासों में ऐसे पात्रों का चरित्र-चित्रण किया गया है कि जिनकी भूमिका कथानक में अल्पकालिक है, जो प्रधान पात्रों के कार्यों में सहायक होते हैं। किंतु कथानक के फल को अन्त तक प्रभावित करते हैं। अवस्थी जी के उपन्यासों में प्रमुख पात्र ऐसे ही पात्र है, जो सनातन कथानक को प्रभावित करते हैं। इनमें से कुछेक ऐसे पात्र है, जो कथानक में आदि से अंत तक प्रभावित करते रहते हैं, कथानक के कार्य को पूर्ण करते हैं, ऐसे पात्र को प्रमुख-पात्र कहा जाता है, मैंने इस दृष्टि से उपन्यासों के प्रमुख पात्रों का चरित्र चित्रण पर प्रकाश डालने की कोशिश की है। अवस्थी के उपन्यासों में पूर्व युग से साहित्य का प्रधान विषय मनुष्य के व्यक्तिगत दुख सुख पर केन्द्रित रहता था। अवस्थी जी ने यह अनुभव किया कि मनुष्य समाज का अंग है। उनके जीवन की प्रत्येक गतिविधियाँ सैंकड़ों विधि निषेध द्वारा सीमा बद्ध हैं। अवस्थी जी के साहित्य के युग में व्यक्ति के ऊपर समाज द्वारा किये गये विचार शून्य उत्पीड़न एवं अलाभकारी नीति के विरूद्ध मन का विद्रोह दिखाई देता है। इस युग का सुंदर सत्य में सम्मिलित दिखाई देता है। इसमें व्यक्ति एवं समष्टि की व्यक्ति के हृयदय के अविग एवं रूपहिन समाज शक्ति के गतिवेग का समादेश देखने को मिलता है। अवस्थी जी के सिरजे हुए साहित्य के रस की उपलब्धि को देखकर उन्हें वर्तमान युग का महान साहित्यकार कहा जा सकता है। इनके संदर्भ कहा जाए तो समाज शक्ति के विरूद्ध जो प्रचंड अभियोग विदेशी साहित्य में आंदोलित हुआ है, उसकी गूंज अवस्थी जी साहित्य में दिखाई देती है। उनकी रचना की एक विशेषता यह है कि समाजशक्ति के उत्पीड़न से व्यक्ति का व्यक्तित्व क्षुण्ण नहीं हुआ है एवं यह भी ध्यान में रखना होगा कि समाज शक्ति पर चोट की है। प्रदानत: उसकी नीति की ओर से अर्थ नीति और से उतना आघात नहीं है।

बंजारी :-

बंजारी 'सूरज किरन की छांव' उपन्यास की नायिका एवं कंगला की प्रेमिका है और जोसेफ की पत्नी है। बंजारी आदिवासी भोली-भाली युवतियों का प्रतिनिधित्व करने

वाली नायिका है। वह गाँव की सबसे खूबसूरत युवती है। अपनी छोटी सी भूल के कारण उसे जीवन भर पछताना, छटपटाना पड़ता है। "उसने बहिन कहा तो में चौंकी, पर तापे को संतोष हुआ। बोला, भाई की भेंट भला कौन टालता है, ले ले बंजारी। विलियम से उसने कहा, पर अब आगे हम कुछ न लेंगे। तुमने इसे बहिन माना है बेटा, तो जिन्दीभर यह नाता निबाहना।

विलियम चला गया। दूसरे दिन गाँव के बाहर नयी बन रही चरख के पास वह खड़ा मिला। मैंने पास पहुँचकर चिहुँटी ली, बोली, भइया ! उसने चौंककर मुझे देखा, क्या कहा ?

मैंने दुहराया, भइया.....

उसने भवें तान लीं, बहिन बनता है?

तुने ही तो बनाया है रे, कल, भूल गया?

उसने हँस दिया, बोला, पगली कहीं की, नाते-रिश्ते तो मानने के होते हैं। जब जो जी चाहे बना लो औक बिगाड़ लो। माँ को छोड़कर, सब बदलाहट के नाते हैं बंजारी। जब जो जमे बैठाल दिया। तू इतने ही से बहक गयी। तू ही बता, क्या कहता तेरे तापे से?

क्या कहता है विलियम? नाते-रिश्ते भी बदलते है! हमारे यहाँ ऐसा नहीं होता। मिलावट तेरे यहाँ ही है, बदलाहट भी वहीं होगी।

बहिन कहने से कहीं बहिन हो गयी? तू भी पागल हुई है। कहने से काम होने लगे, तो जमाना खाक हो जाय। में कह दूँ कंगाली मर जाय.....।

मैंने दौड़कर उसके मुँह पर हाथ रख दिया। मुझे अच्छा नहीं लगा।"[1] पूरे उपन्यास में वह छटपटाती रहती है। कंगला उसे जी जान से चाहता है लेकिन बंजारी विलियम के बहकावे में अकर सब कुछ खो देती है। पंचायत के निर्णय के अनुसार उसे जोसेफ से विवाह करना पड़ता है। जोसेफ भी उसे प्यार नहीं करता और अंत में पहाड़ पर ले जाकर मिस्टर कपूर को पाँच सौ रुपये में बेच देता है। वहाँ बंजारी को अपनी मर्जी के खिलाफ वेश्या व्यवसाय करना पड़ता है। इस तरह वह जीवन भर छटपटाती है। बंजारी अच्छी पत्नी है। जोसेफ जैसे चरित्र-हीन व्यक्ति के साथ भी वह पत्नीत्व का निर्वाह तन, मन से करती है। उसमें गजब की सहनशीलता है। जोसेफ से पीटने के बाद भी वह जोसेफ से माफी माँगती है। उसके मिलनसार स्वभाव के कारण ग्रेसरी, मरियम, मैडम मिस्पा और पटेल की लड़की लाजो से अच्छी दोस्ती है। वह कुशल गृहिणी है। वह आदिवासी समाज में बनने वाले भोजन को बहुत अच्छे ढंग से बनाती है। वह धार्मिक प्रवृत्ति की युवती है। धर्म और ईश्वर पर उसका अगाध विश्वास है। बंजारी प्रगतिशील विचारों की युवती है। यह प्रगतिशीलता उसमें पढ़ाई के बाद आती है। अंत में जब जोसेफ उसे बेच देता है तो वह विद्रोही बन जाती है। वह मिस्टर कपूर का विरोध करती है। उसे जब मिस्टर कपूर से छुटकारा मिलता है तो समाज की परवाह किये बिना कंगला के साथ रहना पसंद करती है। अत: इस प्रकार हम कह सकते है कि बंजारी में आदिवासी जीवन की उस युवती के सौंदर्य, रूप तथा उसके जीवन में आने वाले अनेक अवांछित तत्वों के कारण उत्पन्न छटपटाहट, विवशता, सहनशीलता, विद्रोह आदि के दर्शन दिखाई पड़ते हैं।

कंगला :-

कंगला उपन्यास का प्रमुख पात्र और बंजारी का प्रेमी है, जिसका चरित्र चित्रण अवस्थी जी ने अन्य पात्रों के संवादों से किया है। कंगला बंजारी से एकनिष्ठ प्रेम करता है। जैसे कि "महीनों बाद बंजारी नाम सुना था, खुशी का ठिकाना नहीं रहा। मैंने कहा, काका, फिर तो कहा। उसने पूछा, क्या बेटी। मैं बोली वही, जो अभी कहा था बं.....जा.....।

वह खूब हँसा। इतना कि पेट फूलने लगा. वह हँसता ही रहा और झरपन तथा सरपन ने खिलखिलाते हगुए जोर से कहा, बं.....जा.....री। मैं दोनों के गले से भम गयी।

बाद में मैंने कुशल क्षेम पूछी। गाँव भर के आदमियों की याद की। झरपन ने बताया, आवा ओर तापे मेरी याद में दिन रात नदिया बहाते रहते हैं। आवा की आँखें कमजोर पड़ गई हैं। तापे का भगवान मालिक है। कमर टूट गयी है उसकी। सरपा ने बताया कि आजकल झरपन की चकाचक है. कंगला की नजरें उसपर सीधी हैं. झरपन ने मेरे गाल पर चिहुँटी ली, इशारा किया, दो कदम बाजू ले गयी। उसने धीरे से कान में बताया कि कंगला अब भी मेरी याद नहीं भूला। दिनभर रोता रहता है। कहता है - बंजारी ने दगा किया है, तो जिंदगी क्वाँरी बिता दूँगा। यहाँ गुम्मा ने एक नयी बात बतायी, सुनकर कलजा फट गया।"[1] परंतु बंजारी उसके प्रेम की गहराई को न समझकर विलियम नामक युवक के बहकावे में आ जाती है. इसके परिणामस्वरूप कंगला का दिल टूट जाता है। झरपन उसकी दयनीय स्थिति का वर्णन इन शब्दों में करती है - "कंगला अब भी मेरी याद नहीं भूला। दिनभर रोता रहता है। कहता है ..... बंजारी ने दगा किया है, तो जिन्दगी क्वाँरी बिता दूँगा। यहाँ गुम्मा ने एक नयी बात बतायी, सुनकर कलेजा फट गया। उसने बताया कि विलियम टिमकी के पीछे पड़ा है। टिमकी उसके प्यार में अंधी हो गयी है।"[2] इस प्रकार कंगला बंजारी को जीवन भर भूल नहीं पाता है। आदिवासी युवक होने के कारण कंगला एक कुशल नर्तक के रूप में हमारे सामने आता है। कंगला का प्रमुख रूप में एकनिष्ठ प्रेमी के रूप में चि6म किया गया है। सरलता, सहृदयता, कठोर परिश्रमी आदि उसके चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ हैं।

जोसेफ :-

जोसेफ सूरज किर की छांव उपन्यास का अन्य प्रमुख पात्र एवं नायिका बंजारी का असफल पति है। "जोसेफ का हाथ गहे अभी तीन-चार महीने ही हुए थे। इस छोटे समय में ही काफी बदल गयी थी। बदलाहट की चाल तेजी थी। जो आज थी सो कल न रही, जो कल बनी सो परसों न थी। सुबह का हर नया सूरज मुझे एक नयी किरण दे जाता था। यह किरण कभी एक नयी गरमी सारी देह में दे जाती। अधपके महुए की शराब की पहली बूँद जैसी मादकता अंग अंग में भर जाती, तो कभी पीड़ा, क्रोध और धृणा से मन बिगड़ जाता। पेट में जैसे शूल उठता, गले में कोई भारी गोला अड़ जाता। आँखों के सामने अँधेरा और सारे शरीर में सुनसुनी। जिन्दगी से तब मौत अधिक सुंदर दिखती। .....यह सब क्यों, कब और कैसे होता, में नहीं बता सकती। जितना खुद अनुभव करती

थी, काश, उतना प्रकट कर सकती।"[1] जोसेफ अत्यंत स्वार्थी, बेईमान, अत्याचारी और चरित्रहीन व्यक्ति है। "जोसेफ एक अजीब लहजे में बोला, क्या खराब है डागघर साहब, आप भी तो ईसाई हैं न ?

तो क्या हुआ। मरजी से धरम बदले सो ठीक.....।

यह आप क्या कर रहे हैं।"[2] जोसेफ धन को ही सर्वोपरी मानता है। पैसों की लालच में वह अपनी पत्नी बंजारी को भी बेच देता है. उसके मन में अपनी पत्नी के प्रति बिल्कुल प्रेम नहीं है. वह रूबी नामक लड़की से नाजायज संबंध रखता है। वह शराबी, निष्ठुर और कामचोर व्यक्ति है। वह अच्छी तरह से जानता है कि आज की दुनिया में जीवित रहना है तो धन के अलावा चापलूसी की भी आवश्यकता है। "जोसेफ का दिमाग वैसे ही फिरा था, अब वह पागल जैसा हो गया। कभी रूबी का नाम लेकर चिल्लाता तो कभी कल्दारों की गिनती लगाता। एक कल्दार के लिए एक पत्थर फेंकता और खुशी से नाचने लगता था।"[1] इस प्रकार हम देखते हैं कि जोसेफ में ऐसा एक भी गुण नहीं है कि जो सभ्य व्यक्ति द्वारा ग्रहण किया जा सके।

निष्कर्ष :-

अत: निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं कि राजेन्द्र अवस्थी जी के सूरज किरण की छांव उपन्यास के पात्र कलात्मक एवं वर्तमान जीवन से संदर्भ में चरितार्थ है। पूरे उपन्यास में प्रेम का चित्रण चरितार्थ देखने मिलता है नायिका अपने प्रेमी आदिवासी होने पर भी उसे अपनाना चाहती है। इस प्रकार सूरज किरण की छांव उपन्यास के पात्र कलात्मक एवं रोचक है।

संदर्भ

1. अवस्थी, राजेन्द्र, सूरज किरण की छांव, पृ. 16-17
2. वही, , पृ. 36
3. वही, पृ. 36
4. वही, पृ. 37
5. वही, पृ 46
6. वही, पृ. 169